International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 126-127

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 126-127
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2015
Accepted: 20-12-2015

गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

रहस्यवाद और कबीर

गुंजन कुमारी

सारांश
कबीर के रहस्यवाद को समझने के लिए सर्वप्रथम रहस्यवाद, अनंध्द, ध्यान–योग, उलटबांसी के मूल में निहित जो मूल आशय है उसे समझने की जरूरत है। कबीर में जो रहस्य भावना है, उसका कारण तन को देवालय बनाकर उसी में अपने ईश्वर के साक्षात्कार का प्रयत्न है। इस रहस्य भावना के अनेक प्रतीकार्थ है। कबीर का रहस्यवाद बहुत हद तक आज भी रहस्य ही है। मनुष्य का असली धर्म इस मायालोक से मुक्त होने में है, इस संसार रूपी नैहर को छोड़कर बाबुल के घर जाने में है। कबीर की यह घोषणा उन्हें रहस्यमयी साधना का अनुगामी बनती प्रतीत होती है।

प्रस्तावना
रहस्यवाद भारतीय काव्य के लिए कोई नई चीज नहीं है। वेदों और उपनिषदों में गीता के 11वें अध्याय में, शंकराचार्य के अद्वैतवाद में, सहजानंद के उपासक कण्हपा आदि सिद्धों की रचनाओं में रहस्यवादी भावनाएँ नाना रूपों में व्यक्त हुई है। यदि वेदों और उपनिषदों की बात छोड़ दी भी जाए और केवल हिन्दी की ही बात ली जाए तो यह कहना पड़ेगा कि हिन्दी के प्रारंभिक युग से अर्थात सिद्ध तथा नाथ साहित्य से ही रहस्यवादी विचारधारा हिन्दी में पायी जाती है। आचार्य शुक्ल जी के अनुसार आत्मा और परमात्मा, जीव और ब्रह्म की प्रणयानुभूति ही रहस्यवाद है।
उक्त परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रहस्यवाद एक काव्यधारा है, जिसमें अलौकिक ब्रह्म और लौकिक साधक के प्रेम संबंधों की चर्चा की जाती है और जिसके विस्मयकारी रूप पर आष्चर्य व्यक्त किया जाता है। रहस्यवादी कवि स्वयं और ब्रह्म में एकता स्थापित करता है ब्रह्म की मिलन अनुभूति में सुख का अनुभव किया है तो उससे दूर रहने में विरह का। रहस्यवाद की कुछ विषेषताएँ इस प्रकार है–

1. **अलोकिक सत्ता के प्रति प्रेमः** रहस्यवादी कविताओं में अलोकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासा, प्रेम व आकर्षण के भाव व्यक्त हुए हैं।
2. **परमात्मा में विरह–मिलन का भावः** आत्मा को परमात्मा की विरहिणी मानते हुए उससे विरह व मिलन के भाव व्यक्त किए गए हैं।
3. **जिज्ञासा की भावनाः** सृष्टि के समस्त क्रिया तथा अदृष्य ईष्वरीय सत्ता के प्रति जिज्ञासा के भाव प्रकट किये गए हैं।
4. **प्रतीकों का प्रयोगः** प्रतीकों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की गई है।

हिन्दी में रहस्यवाद का स्वर मुखर रूप से सर्वप्रथम कबीर की वाणी में सुनाई देता है। कबीर एक पहुँचे हुए संत थे। उनकी अनुभूति में आत्मा–परमात्मा की एकता का सुन्दर चित्रण हुआ। वे कहते हैं–

''जल में कुंभ कुंभ में जल है,
बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ, जल जलहि समाना,
यह तत कथ्यो गियानी।'' [1]

कबीर की रहस्यात्मकता भारतीय हठयोग और औपनिषदिक विचारधारा के सुहाग से सम्भूत होने के कारण पूर्ण भारतीय है वैसे थोड़ा बहुत प्रभाव सूफी–साधना का भी पड़ गया है। कबीर के यहाँ रहस्यवाद ईष्वर के स्वरूप, उसकी अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति तीनों स्तर पर देखा जा सकता है। उपनिषदों में ब्रह्म को अपरोक्ष अनुभूति कहा गया है। अनुभूति तो रहस्य के सिवा कुछ हो भी नहीं सकती। इस ब्रह्म को शब्दों से समझाया नहीं जा सकता क्योंकि शब्द विकल्प मात्र होते है, जबकि ब्रह्म निर्विकल्प है। सीमित व्यक्ति वाले शब्द असीम ब्रह्म की व्याख्या नहीं कर सकते। कबीर तर्कों, प्रतीकों और उपमानों के सहारे इस ब्रह्म को समझाने की कोषिष करते हैं।

कबीर ने संसार के सब प्राणियों को एक स्तर पर लाने का जीवन भर प्रयास किया, कबीर के जीवन का लक्ष्य न तो कविता करना था नहीं अपनी अद्वितीय प्रतिभा का प्रदर्षन करना, बल्कि उनका उद्देष्य था, आत्मज्ञान प्राप्त करना, जो आत्मा के आनंद के लिए आवष्यक है, क्योंकि वे तो ब्रह्म के जिज्ञासु थे, साथ ही समाज–सुधारक तथा हिन्दु–मुस्लिम एकता के समर्थक भी। कबीर के साखियों में माया जीव, ब्रह्म आदि गूढ़ विषयों के प्रतिपादन के साथ–साथ कल्पना तत्व का भी अद्भुत सम्मिश्रण है।

सांसारिक मोह–माया से ग्रस्त जीव का ब्रह्म की ओर उन्मुख होना ही परिवर्तन है। यह एक आध्यात्मिक जागरण है, जिससे सांसारिक कर्मों में लगा जीव अपने जीवन की निरसता को समझ कर ब्रह्म की ओर उन्मुख होता है। कबीर के यहाँ परिवर्तन की भूमिका गुरु निभाता है। गुरु की महिमा पर कबीर ने सर्वाधिक बल दिया है क्योंकि गुरु ही वह शक्ति है जो सांसारिक जीव को सही रास्ता दिखलाता है। कबीर के यहाँ गुरु साधन भी है और मंजिल भी। साधक गुरु की बताई राह पर चलकर ब्रह्म तक पहुँचता है।

रहस्यवाद की प्रमुख रुप से दो कोटियाँ मानी गयी हैं– 1. भावनात्मक रहस्यवाद 2. साधनात्मक रहस्यवाद। कबीर के काव्य में इन दोनों रूपों का निदर्षन मिलता है। भावनात्मक रहस्यवाद की भी तीन अवस्थाएँ मिलती है–प्रथमावस्था में कबीर के मन में ब्रह्म के प्रति जिज्ञासा तथा गुरुज्ञान के माध्यम से आकर्षण उत्पन्न होता है। द्वितीयावस्था में उस ब्रह्म से मिलने की आतुरता या उत्कण्ठा उत्पन्न होती है। इस अवस्था में विरह–मिलन, आषा–निराषा, अभिलाषा–वेदना की अत्यंत सजीव अभिव्यक्ति होती है। उनका विरह–वर्णन इस रूप में प्रकट होता है–

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।। [2]

तीसरी अवस्था परमात्मा से मिलन की अवस्था है। एक उदाहरण देखिए–

पाणी हीं तै हिम भया, हिम हवै गया विलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाइ। [3]

उपर्युक्त पंक्तियों में कबीर ने जीवात्मा–परमात्मा के एकाकार होने की स्थिति का वर्णन किया है। यह अद्वैत की स्थिति है। भावना प्रेम की प्रधान प्रवृति है प्रेम की चरम परिणति दाम्पत्य प्रेम में देखी जाती है। अतः रहस्यवाद की अभिव्यक्ति सदा प्रियतम और विरहणी के आश्रय से होती है। यह प्रेममूलक रहस्यवाद भी भावनात्मक रहस्यवाद के अन्तर्गत ही आ जाता है। इसके अंतर्गत कबीर स्वयं के सुहागिनी होने का स्वांग रचते हैं–

दुलहिनी गावहु मंगलचार
हम घर आए राजा राम भरतार। [4]

कबीर के काव्य में रहस्यवाद का साधनात्मक पक्ष भी पूर्णरूपेण दृष्टिगोचर होता है। संत सम्प्रदाय का सीधा विकास योगियों के नाथ–सम्प्रदाय से हुआ माना जाता है, अतः कबीर पर उनकी साधना (हठयोग आदि) का प्रभाव है। इनके साहित्य में इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, पटदल, ब्रह्मरंध्र (सहस्त्रार मुख), सहज साधना जैसे शब्द बहुतायत में मिलते हैं।

कबीर के दार्षनिक चिंतन पर भारतीय वेदांत, नाथ आदि विचारधारा के प्रभावों के कारण तथा कागज की लेखी के स्थान पर स्वानुभूति को अधिक महत्व देने के कारण कबीर के ब्रह्म, ईष्वर या निराकार राम का स्वरूप और भी अधिक रहस्यमय हो गया है। उस परम सत्ता के वास्तविक रहस्य का उद्घाटन संभव नहीं है, वह तो गूंगे के गड़ की भांति अनुभवगम्य होता है।

कबीर के रहस्यवाद में सतत चेतनाषीलता है अर्थात् वह सदैव जागृत रहे। कबीर संसार की निस्सारता की चर्चा एक क्षण भर के लिए भी नहीं भूलते हैं और वह अपने–अपने प्रियतम से एक क्षण के लिए विलग नहीं होना चाहते हैं। उनके अनुसार मन को निरंतर जागृत रहना है जिससे कोई धोखा न खा जाए और सन्मार्ग विस्मृत न हो जाये। चेतनाविहीन होने पर परमात्मा से सम्बन्ध छुटने का भय है। माया रहित होकर उस परब्रह्म अनंत का ध्यान केवल भावना से ही नहीं अपितु पवित्र आत्मा की सारी शक्तियों से ही होना चाहिए। कबीर के हृदय में ईष्वर के प्रति प्रेम–भाव की अवतरित अबाध धारा प्रवाहित होती रहती है, उनकी उक्तियों में आत्मा–परमात्मा, जीव, जयत, माया आदि सम्बन्धी आध्यात्मिक तत्वों का सन्निवेष मिलता है। वे संसार को मिथ्या और निस्सार बताते हुए ईष्वर से मिलन के प्रति सदैव जागरुक रहते हैं और उनकी उस अज्ञात सत्ता के प्रति भावना संचरणषील नहीं रहती अपितु उनका अणु–अणु उससे मिलन की ओर तत्पर रहता है।

कबीर ने साधना की बातों को भी अभिव्यक्ति की कुषलता के माध्यम से इस प्रकार उद्घाटित किया है कि वे रहस्यवादी हो गई है। अनेक रूपकों और अन्योक्तिपूरक उक्तियाँ द्वारा कबीर ने प्रेम की ही अबाध धारा बहायी है और प्रेम के सहारे रहस्यवाद की अभिव्यक्ति की है। इस रहस्यवाद की अनुभूतिमूलक स्थिति का भी उन्होंने बड़े सुन्दर शब्दों में उल्लेख किया है। कबीर ने बहुत से स्थलों पर साधारण सी बातों को इस प्रकार की सांकेतिक शैली में अभिव्यक्त किया है कि वे रहस्यमयी हो गई है।

रहस्यवाद के क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने कबीर की अपेक्षा जायसी को श्रेष्ठ माना है, लेकिन वास्तव में सूर्य और चन्द्र की श्रेष्ठता प्रतिपादित करना युक्तिसंगत नहीं बैठता है क्योंकि दोनों का अपने स्थान पर अलग–अलग महत्व है। हाँ, कबीर के रहस्यवाद को केवल आध्यात्मिक ऐकान्तिक, व्याष्टिमूलक, सजीव और वर्णात्मक मानना अनुचित है। उसमें अभिव्यक्त प्रेम अत्यंत सरस, मार्मिक और उच्च कोटी का है। मसलन अपने भावात्मक रहस्यवाद के अंतर्गतकबीर अधिकतर दाम्पत्य प्रेम के रूपक बाँधते हुए अपनी बात कहते हैं। नैहर छोड़कर जाने की ललक अनेक पदों में व्यक्त हुई है। कभी अखियाँ इतना अलसा गई है कि सुहागिन पिया से सेज पर चलने के कह रही है। कबीर की अद्वैतवाद में आस्था रही है। अतः उनके रहस्यवाद की अंतिम स्थिति में आत्मा का परतात्मा से पूर्णतया एक्य हो जाने या आत्मा के परमात्मा में विलीन होने के भाव व्यक्त किए गये हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की यद्यपि कबीर की रचनाओं में भावात्मक और साधनात्मक दोनों ही प्रकार का रहस्यवाद तो मिलता ही है, उन्होंने पारिभाषिक शब्दों से ओत–प्रोत रहस्यमयी उक्तियाँ भी लिखी है किन्तु जहाँ तक उनके मन के रमने का प्रष्न है, वह भावात्मक रहस्यवाद में ही रमा है। साधनात्मक रहस्यवाद सम्बन्धी उदगार भी कबीर ने प्रचुर मात्रा में व्यक्त किया है, किन्तु उनके बाह्याचारों के विरोधी अन्तर्मन ने उनका विरोध भी कम नहीं किया है। अतः कबीर के काव्य में प्रेमात्मक रहस्यवाद ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ रहस्यवादी कवि ठहराता है।

संदर्भ

1. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुंदर दास, पृ0–103
2. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुंदर दास, पृ0–215
3. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुंदर दास, पृ0–112
4. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुंदर दास, पृ0–69